सृष्टि सृजन का महापर्व है-महाशिवरात्रि

एक ऐसा वक्त जब पशु, पक्षी, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे अपने पुराने कलेवर में बदलाव के दौर पर होते हैं। पेड़ों की टहनियों में अजीब–सी सुखान के बाद नयी-नयी कलियों और कोमल पत्तों के साथ नये जीवन की शुरूआत होती है। यह वक्त है भारत की चार ऋतुओं में सुप्रसिद्ध तथा प्रकृति और पुरूष को तरोताजा कर देने वाली बसंत ऋतु की। यह ऐसा समय होता है जब सब कुछ नया दिखने लगता है। नयी उमंगों के साथ नयी तरंगें भी प्रवाहित होने लगती है। निश्चित तौर पर यह सत्य है कि जैसे प्रकृति में इस तरह का बदलाव पुराने वर्ष के अन्त और नये वर्ष के शुभारम्भ के दौरान आता है ऐसे ही पूरे सृष्टि चक्र में आत्मा और परमात्मा के बीच भी इसी तरह की घटना घटती है जिसकी यादगार के रूप में मनायी जाती है 'शिवरात्रि'।

फाल्गुन मास के अन्त में अमावस्या से एक दिन पूर्व मनाया जाने वाला महाशिवरात्रि पर्व सृष्टि चक्र के कल्प में नयी दुनियां की स्थापना और पुरानी के महाविनाश का द्योतक है। परमपिता परमात्मा शिव द्वारा नयी सृष्टि की स्थापना का पर्व है। शिव अर्थात कल्याणकारी और रात्रि अर्थात अज्ञानता की रात्रि। पूरे सृष्टि चक्र में पार्ट बजाते-बजाते जब मनुष्य अपने स्वधर्म, स्वराज्य, श्रेष्ठ कर्म को भूल देहाभिमान, अवमूल्यों के जाल में फंस जाता है तब परमपिता परमात्मा शिव सृष्टि पर अवतरित होकर उसे देहाभिमान से उपर उठाते हुए नये कलेवर अर्थात आत्मा के सात गुणों को पुनर्स्थापित करने, मानव को देव बनाने का महान कार्य करते हैं। जिसकी यादगार शिवरात्रि या शिवजयन्ति आज भी बड़े श्रद्धापूर्वक तथा अन्य पर्वों के भेंट में भिन्न-भिन्न तरीके से मनायी जाती है।

महाशिवरात्रि का अर्थ और पूजन: सभी देवी-देवताओं तथा महापुरूषों का जन्मदिन अथवा निर्वाण दिवस मनाया जाता है। परन्तु सारे सृष्टि के रचयिता, सर्व के कल्याणकारी परमात्मा शिव के अवतरण दिवस के साथ रात्रि शब्द जोड़ा जाता है। जो अनेक रहस्यों को उजागर करता है। परमात्मा की स्थापित मानवीय दुनिया पर जब मूल्यों के पतन के कारण घोर अज्ञानता की रात्रि छा जाती है। चारो तरफ कर्मकाण्ड और आडम्बर का साम्राज्य हो जाता है, लोगों में आपसी मतभेद तथा आसुरी प्रवृत्तियां हावी हो जाती है, तब सृष्टि चक्र के अन्त तथा नयी सृष्टि सृजन के लिए स्वयं परमपिता परमात्मा का इस धरा धाम पर अवतरण होता है। यह ऐसा समय होता है जब चारों तरफ अज्ञानता की रात्रि होती है।

सबसे रोचक बात तो यह है कि शिव की पूजा सभी देवी-देवताओं की पूजा से भिन्न होती है। शास्त्रों के अनुसार, परमात्मा शिव भोलेनाथ को भांग, धतूरा और अक के फूल ही पसंद हैं। इस तरह की निरर्थक वस्तुओं को ईश्वर का पसंद होना, सचमुच विशेष रहस्यों का द्योतक है। इस अज्ञानता की रात्रि के वक्त परमात्मा का सर्व मनुष्यात्माओं प्रति यही संदेश है कि भांग, धतूरा, अक के फूल जैसे निरर्थक अवगुण मनुष्यों की मानवीयता को छिन्न-भिन्न करते हैं। ऐसे अवगुणों को परमात्मा के उपर अर्पित कर उनसे मिल रहे ज्ञान, गुण, शक्ति, प्रेम, आनन्द, सुख और शांति को प्राप्त कर जीवन को श्रेष्ठ बनाना है। यही परमात्मा का उद्देश्य होता है। परमात्मा के अवतरण से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि अवांछनीय तत्व भाग जाते हैं। इससे मनुष्य के जीवन में देवत्व का प्रकाश उदीयमान होता है। जिससे व्यक्ति के दृष्टिकोण, सोच, संकल्पों में महान परिवर्तन आता है। अर्थात् वह दैहिक सम्बन्धों को भूल कर

आत्मिक सम्बन्धों को अपने जीवन का अंग बना लेता है। यही से शुरू होता है नये युग, नयी सुबह का आगाज।

परमात्मा शिव, नंदी और भागीरथ का रहस्य: सबसे विचित्र बात तो यह है कि सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा शिव की सवारी बूढ़े बैल अर्थात नन्दीगण को दिखाया जाता है। जो स्वयं सर्वशक्तिवान हो भला उसके लिए बैल की सवारी का क्या अर्थ है। इसका भी गहरा आध्यात्मिक महात्म्य है। परमात्मा शिव का अपना शरीर नहीं है। वह ज्योतिर्बिन्दु निराकार है। कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के बीच में अर्थात पूरे कल्प के अन्त और नये कल्प के प्रारम्भ के समय परमात्मा नयी सृष्टि के सृजन के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेते हैं तथा नयी दुनियां की स्थापना के लिए सर्व आत्माओं को काम, क्रोध, लोभ, मोह छोड़ कर दैवी गुणों की धारणा की शिक्षा देते हैं। यह नन्दीगण बूढ़े बैल तो मात्र प्रतीक है। परन्तु इसका अर्थ यह है कि परमात्मा, प्रजापिता ब्रह्मा के बूढ़े तन का उपयोग सृष्टि को नया बनाने में करते हैं इसलिए शास्त्रों में वर्णित है कि परमात्मा बूढ़े बैल अर्थात नन्दी की सवारी करते हैं।

परमात्मा की इस सवारी को भागीरथ भी कहते हैं। भागीरथ अर्थात 'भाग्यशाली रथ' जिसका उपयोग स्वयं परमात्मा के अवतरण के लिए होता है। इनसे भाग्यशाली और कौन कहा जा सकता है। इस समय परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा करा रहे हैं।

वर्तमान समय में शिवरात्रि की सार्थकता: आज चारो तरफ अज्ञानता, अत्याचार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, हिंसा, व्यभिचार, अश्लीलता का बोलबाला है। मानवीयता दम तोड़ रही है। पूरी की पूरी दुनियां विनाश के मुहाने पर खड़ी है। इससे और ज्यादा धर्मग्लानि और क्या हो सकती है। पूरी सृष्टि में भय का माहौल है। सभी मनुष्यात्मायें शांति और सुख की तलाश में दौड़ रही है। यह समूची सृष्टि के बदलाव का संकेत है। ऐसे में स्वयं परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर नये युग, नयी दुनियां की स्थापना का कार्य करा रहे हैं। अब समय की मांग है कि परमात्मा द्वारा दिये जा रहे महान कार्य में स्वयं को भागीदार बनायें। परमात्मा से मिलन मनाकर सुख शान्ति का वर्सा प्राप्त करें। यह कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का समय है। जिसमें परमात्मा का अवतरण हुआ है। इस सत्य को पहचान अपने जीवन को श्रेष्ठ बनायें। यही हमारी सच्ची-सच्ची शिवरात्रि होगी।